कथा क्रम

अक्टूबर-दिसम्बर 2020

मूल्य - ₹ 35

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

Scanned with CamScanner

ISSN-2231-2161

वर्ष : 23 अंक : 86

अक्टूबर-दिसम्बर 2020

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

(केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त)

कहानियां

11 रामनाथ शिवेन्द्र : मृत्युमति

18 रमेश कपूर : क्या वह पागल था?

23 राजशेखर पंत : पुल वाली लड़की

27 वीणा वत्सल सिंह : प्यार का एनीमेशन

59 श्याम सोकरा : मोती चूर के लड्डू

65 राजा सिंह : कार्यकर्ता

71 सुस्मित सौरभ : 383.3 KHZ
ये बारिशें कुछ कहना चाहती थीं

लघुकथाएं

22 पूनम पांडे : मनोवृत्ति

26 अनिता रश्मि : तंबाकू

70 सुमित कुमार : शराबी की जाति

कथा नेपथ्य

05 मधुरेश : पितृसत्ता के दुर्ग-द्वार पर

लेख

32 विनोद शाही : इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी के नये हाशिये

45 अरविन्द त्रिपाठी : उग्र : एक अकेला आदमी गाता है गीत कोरस का

पुनर्पाठ

49 बलवन्त कौर : एक लोकप्रिय भारतीय उपन्यास

आत्माख्यान

53 गोविन्द मिश्र : मैं बच गया

कविताएं

81 सुभाष राय : बारिश जब भी आती है, चाँद से कहूंगा, प्रतीक्षा, विशाला से क्षमा याचना सहित

82 निर्मल गुप्त : बच्चे खेलते हैं, सपने और सपने में फर्क

83 मुकेश कुमार : गांव, लुप्त,

84 वीणा श्रीवास्तव : बो रहे हैं नई किस्म की फसल, सजा जारी होने की

85 आलोका कुजूर : शिंगी : सुर बुरू (सूरज डूब जाता है), किरीबुरू (पेड़ का नाम), रोरो : बुरू (आवाज करता पहाड़/पत्थर)

86 प्रद्युम्न कुमार सिंह : हत्याएं

87 अजित कुमार राय : बारिश की छांव में चन्द्रग्रहण के उस पार

डायरी

88 शशांक : कम-कम लिखना, बदला-बदला समाज

रंगमंच

93 प्रज्ञा रोहिणी : कबीर केंद्रित नाटकों में सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

कथा-शोध

100 रामडगे गंगाधर पिराजी : किन्नर जीवन और समाज : संदर्भ-मंगलमुखी समुदाय

समीक्षाएं

104 ज्योतिष जोशी : सिसकियों की संगत पर प्रेम की पुकार (उपन्यास : हृषीकेश सुलभ)

107 टेक चन्द : केरल में अस्मितामूलक आंदोलन और दलित साहित्य (अध्ययन : बजरंग बिहारी तिवारी)

109 जीवन सिंह : कालजयी कहानियों का आलोक (आलोचना : सूरज पालीवाल)

02 सम्पादकीय : सड़क पर अन्नदाता

आवरण : बंसीलाल परमार

रेखाचित्र : मार्टिन जॉन

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन सहयोग
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 35 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹

(सारे भुगतान मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257- गोलागंज, लखनऊ। फोन : 0522-2200425

Scanned with CamScanner

कबीर केंद्रित नाटकों में सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

चर्चित युवा लेखिका। अब तक 2 कहानी संग्रह तक्सीम व मन्नत टेलर्स तथा दो उपन्यास गूदड़ बस्ती व धर्मपुर लॉज प्रकाशित। सभी प्रमुख पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। नाट्यालोचना में भी सक्रिय जिससे सम्बन्धित पुस्तकें नुक्कड़ नाटक, जनता के बीच जनता की बात, नाटक पाठ और मंचन और एक बाल साहित्य की पुस्तक प्रकाशित। विभिन्न सम्मानों से समादृत। सूचना और प्रकाशन मंत्रालय द्वारा 2008 का भारतेन्दु हरिश्चंद पुरस्कार, प्रतिलिपि कथा सम्मान 2015, मीरा स्मृति पुरस्कार 2016 व कहानी संग्रह पर महेन्द्र प्रताप स्मृति कथा प्रथम पुरस्कार।

सम्प्रति - किरोड़ीमल कालिज, दिल्ली विवि के हिंदी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर।.

संपर्क- ई-112, आस्था कुंज, सेक्टर-18, रोहिणी, दिल्ली-110089

□ प्रज्ञा रोहिणी

यों तो हर युग की चुनौतियां और उनसे लड़ने के औजार अलग होते हैं पर युग के बड़े अंधकारों से लड़ने के लिए कभी-कभी दूर अतीत में चमकता हुआ दिया मुक्ति की राह दिखा देता है। एक सजग रचनाकार अक्सर अतीत के इन प्रेरणा पुंजों से दिशा पाता हुआ अपने वर्तमान को व्याख्यायित भी करता है। जैसे अपने समय के आध्यात्मिक-सामाजिक सवालों के उत्तर के लिए कबीर को राम याद आते हैं तो तुलसी भी अपने तरीके से राम का स्मरण करते हैं। आधुनिक काल में निराला राम को याद कर 'राम की शक्तिपूजा' लिखते हैं तो नरेश मेहता मानवता के संकट और युद्ध के औचित्य पर विचार करते हुए राम को केंद्र में रखकर 'संशय की एक रात' लिखते हैं। इसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के अनेक काव्यों, कथाओं और नाटकों में कबीर की सशक्त उपस्थिति दिखाई देती है। कहते हैं कि अतीत मात्र अपने साथ अपने समय की स्वर्ण रश्मियां ही लेकर नहीं आता अपितु अनेक प्रेतछायाएं भी उसके साथ चली आती हैं। तो सवाल उठता है बीसवीं शताब्दी का एक रचनाकार मध्यकाल के एक निम्न जाति के अनपढ़ और निर्धन संत से क्या हासिल करेगा? कहीं यह अतीत का महिमामंडन तो बनकर नहीं रह जाएगा? कहीं यह मनुष्य को ईश्वरत्व दिलाने का प्रयास भर तो नहीं रह जाएगा? या फिर कुछ ऐसा उलझा हुआ है जिसे आज का रचनाकार अपनी तमाम आधुनिक अवधारणाओं, संवेदनाओं और विचारों से नहीं सुलझा पा रहा है। यह उलझाव बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में, जिसे हम अपना समय कहते हैं, और अधिक गहरा हुआ है। उलझाव को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे गहरी-सी खाई की ओर कोई आदमी आंख पर पट्टी बांधे चला जा रहा हो और आप उसके कंधे पर हाथ रखकर कहें- सुनो भाई आगे गहरी खाई है, रुक जाओ। और वह आदमी पलटकर कहे- तुझे दिखाई नहीं देता, मैं तो पहाड़ की चोटी पर चढ़ रहा हूं। ऐसे में आप कबीर को याद करके कहेंगे-'साधु देखो जग बौराना, सांच कहो तो मारन धावै, झूठ कहे पतियाना।' संभवत: कबीर पर आधारित रचनाओं के लेखकों का भी अनुभव कुछ ऐसा ही रहा हो।

सन् 1979 से 1998 तक के कालखंड में हिंदी में चार बड़े नाटक कबीर पर आधारित हैं। भीष्म साहनी का 'कबिरा खड़ा बाजार में', नरेंद्र मोहन का 'कहै कबीर सुनो भई साधु', मणि मधुकर का 'इकतारे की आंख' और महावीर अग्रवाल का- कार्श का जुलाहा' ऐसे ही चर्चित नाटक हैं। इसके अतिरिक्त अभिमन अनत का 'देख कबीरा हांसी' एक प्रतीकात्मक नाटक है जिस युवक पात्र पर कबीर के विचारों की छाप सी दिखाई देती हैं हाल ही में शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथा 'अक्करमाशी' आधारित रणधीर सिंह द्वारा निर्देशित नाटक 'आउटकास्ट' में क के पदों को लिया गया है। हम इन नाटकों के कथ्य और प्रस्तुति का यदि विश्लेषण करें तो यह जान पाएंगे कि ऐसे कौ राजनीतिक-सामाजिक प्रश्न हैं जिनसे जूझते हुए ये सभी नाट कबीर की ओर उन्मुख हुए।

Scanned with CamScanner